ISSN: 2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197(IIJIF)
(UGC Approved
Journal No. 63716)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 4 NO. 1 JAN. 2018
A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

SPECIAL ISSUE

On the Occasion of One Day National Conference On

WOMEN EMPOWERMENT CHALLENGES AND SOLUTIONS

27th January, 2018

(Book IV)

2017-2018

Editor
Mr. Eshwar L. Rathod

Principal
Dr. A. D. Mohekar

ORGANIZED BY
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
DNYAN PRASARAK MANDAL'S
SHIKSHAN MAHARSHI DNYANDEO MOHEKAR MAHAVIDYALAYA,
KALAMB. DIST. OSMANABAD

43. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया	प्रा. पी.वाय.गडकरी प्रा. डॉ. प्रतिभा बी. अहिरे	116
44. लिंग विषमता आणि स्त्रियांचे जीवन	प्रा.बळीराम वसंतराव पवार	119
45. साहित्य, समाज आणि स्त्रिया	कु. ज्योती शरद इंगळे	121
46. महिला सबलीकरण आणि शासन सहकार्य	प्रा. राजाराम रा. भिसे	122
47. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया : सामाजिक विश्लेषण	डॉ. नानासाहेब जाधव रवि सोळुंके	125
48. भारतीय समाजातील हुंडा पद्धतीचा स्त्रियांवर होणारा परिणाम	प्रा. पुंडगे भिमराव दलितराव	127
49. स्त्रीवादी अभ्यास विकास आणि स्त्रिया	प्रा. पाटील श्रीधर नरसिंगराव	129
50. भारतीय महिला आणि स्त्री मुक्ती चळवळ	प्रा.प्रशांत क्षीरसागर	130
51. भारतीय समाज व्यवस्था व स्त्रिया	प्रा. करूणा प्रषांत इंगळे	123
52. भारतीय समाजव्यवस्था व स्त्रिया	प्रा. सीमा भीमराव औटे	136
53. भारतीय महिला आणि हुंडा - प्रथा	शेख शहारुख फारुख	139
54. भारतीय संस्कृती परंपरा आणि स्त्रिया	डॉ. मेधा गोसावी	141
55. डॉ. शैला लोहिया यांच्या समाजवादी महिला विषयक भूमिका व कार्य	कान्होपात्रा सखाराम क्षीरसागर	143
56. महिला सबलीकरण : आव्हाने आणि उपाय	प्रा.शहादेव शिवाजी डोंगर	145
57. मरिआईवाला जमात आणि स्त्री.	प्रा.जयश्री डंके	147
58. लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा.गडमे ए.एम.	149
59. महिला सक्षमीकरणात बचत गटांची भूमिका	प्रा. दिलीप कुमरे	151
60. लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा. खेत्री एच.आर.	154
61. स्त्री–मुक्ती चळवळ	प्रा. शिवदास दगा पावरा	157
62. भारतिय स्त्रियांवरील कौटूंबिक हिंसाचार: कारणे आणि उपाय	स्वाती सुधाकर कुलकर्णी	159
63. हिंसाचार आणि स्त्रिया	श्रीमती. एस.एस.क्षिरसागर	161
64. हिंदूकोड बिल: महिला मुक्तीचा जाहिरनामा आणि डॉ बाबासाहेब	प्रा. बाळासाहेब नरवाडे	163
65. भारतीय स्त्रिया आणि कायदा	प्रा. ज्योती ज्ञानोबा मुंडे	166
66. लिंगभेद विषमता आणि स्त्री जीवन	प्रा.सतीश गंगाराम ससाणे	168
67. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्री	प्रा.डॉ.खलील नबीसाब सय्यद	172
68. महिला सबलीकरण आणि 21 व्या शतकातील आव्हाने	मोरे पंडित किशनराव	173
69. माडसांगवी गावातील महिलांच्या जमिनविषयक मालकीचा....	प्रा. डी. एच. शिंदे	175
70. पश्चिम विदर्भातील कोळी जातीच्या स्त्रियांचा ... अर्थव्यवस्थेत सहभाग	प्रा.अनिल बि.वानखडे	179
71. साहित्य, समाज और नारी.	डॉ. वडचकर एस. ए.	181
72. साहित्य समाज तथा स्त्रियाँ	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	184
73. षेती अर्थव्यवस्थेतील स्त्रियांचे स्थान	डॉ. ज्योती षेशराव दिघाडे	186
74. दहेज प्रथा, समाज और महिला	प्रा.डॉ .काकडे अनिता भिमराव	188
75. लिंगभेद - महिला सशक्तीकरणात प्रसार माध्यमे	प्रा.मुंढे चांगदेव निवृत्ती	190
76. हुंडा प्रथा समाज आणि स्त्रीया	श्रीमती राठोड पारू बाबुराव	192
77. भारतीय समाजव्यवस्था आणि स्त्रिया	प्रा. दिपक भिला चौधरी	194
78. भारतीय समाजव्यवस्था, हुंडा प्रथा आणि स्त्री भ्रूणहत्या	शिंदे अर्चना भास्कराराव	197
79. ग्रामीण समाज जीवनात स्त्रीचे आरोग्य : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. बर्डे नंदलल भिमराव	199
80. जागतिकीकरणात स्त्रिया	खेत्री कुंडलिक रघुनाथ	200
81. **हुंडा-प्रथा, समाज आणि स्त्रिया**	शीतल मारुती कोरडे प्रा. डॉ. अतुल.नारायन चौरे	202
82. शिक्षणातून स्त्री सबलीकरण	प्रा. सौ. माधुरी गोविंद गिरी	204
83. लिंगभाव विषमता आणि स्त्री	प्रा.डॉ. बन वशिष्ठ गणपतराव	205
84. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया	श्रीमती साळुंके इंदू चंद्रकांत	207

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

Chronicle of Humanities and Cultural Studies
(UGC Approved Journal No. 63716)

ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

Lala Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

71.

साहित्य, समाज और नारी.

डॉ. वडचकर एस. ए.
हिन्दी विभाग, कै. र. व. म. सोनपेठ.

मानवी जीवन यापन करने की पध्दती उसकी मानसिकता पर निर्भर करती है, और यह मानसिकता मानव की परम्परागत है! मनव हजारों वर्षों से जिस मानसिकता का गुलाम है उसमें सबसे केंद्र मे है पुरूष प्रधान संस्कृति! थ्जसकी वजह से स्त्री को दुय्यम दर्जा प्राप्त है! टनेकों वर्षो की परम्परा को स्त्रीने भी अपनी नियती मानकर स्वीकार कर लिया है! ज्ब स्त्री को गुलामी और अधिकारों की जानकारी षिक्षित स्त्री को महसुस हुई तब साहित्य में स्त्री विमर्ष का आरंभ हुआ! भारतीय परम्परा और सभ्यता विष्व में श्रेष्ठतम परम्परा के रूप में मानी जाती है! ठसके साथ ही यह भी सत्य है! की हमारे यहाँ कई बार स्त्री को केवल भोग की वस्तू ही माना गया है! इसके उदाहरण भक्तिकालीन कुछ श्रेष्ठ संत कवियोंने स्त्री को कामिनी रूप से दूर रहने का संदेष दिया है! वर्तमान समय में परिस्थितियाँ बदल गयी है! वर्तमान समय में स्त्री के सामने स्त्री अस्मिता का प्रष्न सबसे बडा है! स्त्री – अस्मिता का प्रष्न भारतीय समाज में आधुनिक चेतना का प्रतीक है! आधुनिक स्त्री का जब अपनी भारतीय परंपरा में अपना चेहरा दिखाई नहीं देता है! तब वह अपनी परंपरा की तलाष करती हुई इतिहास में लोटती है! और अपने को स्थापित करना चाहती है! समाज में पुरूष प्रधान संस्कृति को यह समझना ही होगा कि स्त्री समानता की लडाई बुनियादी लडाई है! इससे उसे स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता एवं अस्मिता की पहचान मिलेगी! इस संघर्ष के प्रति, तदर्थभाव, दयाभाव या सहानुभूतिभाव, स्त्री के संघर्ष एवं अवदान को कम करेगा! स्त्री को समानता के संघर्ष के प्रति दया या सहानुभूति की जरूरत नहीं है! बल्कि यह महसूस करने की जरूरत है की यह तो उसका अधिकार था जो उसे दिया जाना चाहिथा!

सदियों से समाज में चली आरही परम्पराओ और रूढिवादी मानसिकता के कारण स्त्री चाहे जिस भी वर्ग, जाति, समूह की रही हो वह जन्मसे ही आपने आपको असहाय और अबला समझकर सदैव पुरूषवादी मानसिकता का षिकार होती रही है! आज समाज में तमाम तरह के बंधनों से जकडी महिलाएं स्वयं की मुक्ति और अपनी अस्मिता केलिए देष के हर कोनेसे आवाज उठा रही है! स्त्री की स्थिति भी युगों से ऐसी ही चली आ रही है! उसके चारों और संस्कारों का ऐसा कूर पहरा रहा है! की उसके अंतरमन जीवन की भावनाओं का परीचय पाना ही कठिन हो जाता है! वह किस सीमा ता मानवी है और उस स्थिति में उसके क्या अधिकार रह सकते है! यह भी वह तब सोचती है जब उसका ह्रदय बहुत अधिक आहत हो चुकता है! स्त्री षोषण के विरूध्द सामाजिक और राजनैतिक आंदोलनों की षुरूआत हुई, जिसके माध्यमसे से स्त्री से जुडे हर तरह के षोषण के विरूध्द राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा ज्योतिबा फूले और सावित्रीबाई फूले आदि विभिन्न महान हस्तीयोने महिलाओं के तमाम तरह की सामाजिक रूढियों, बन्धनों से मुक्त करा कर उन्हे उनका हक दिलाया किन्तु आज भी उनकी समस्याएँ हल नही हो सकी है! पुरूष प्रधान संस्कृ तमे पुरूष की मानसिकता को बदलना बहुत कठीन कार्य है! तो भी आधुनिक स्त्रीने जिस तरहसे अपने आपको बदलकर सिध्द कर दिया है! तो जरूरत ह ैअब पुरूष और स्त्री दोनों की मानसिकता में परीवर्तन लाने की! ठस संबंध में प्रसिध्द विचारक डॉ. सुर्यनारायण रणसुभेजी का मत है की प्रष्न केवल स्त्री की मानसिकता को बदलने का नही, पुरूष की मानसिकता में भी मूलभुत परिवर्तन की जरूरत है! क्योंकि हजारों वर्षो से उसे यह चेताया गया है की स्त्री या तो श्रध्दा की अधिकारणी है (माँ या बहन नारी तुम केवल श्रध्दा हो) अथवा भोग की पत्नी या वेष्या! वर्तमान युग में एक और स्त्रीया अपने कर्तव्य तथा क्षमता का परीचय दुनिया भरमें दे रही है! तो दुसरी और एक वर्ग आज भी स्त्रीकों केवल भोग की वस्तू , मषिने की रूप में ही स्वीकार करने की मानसिकता का गुलाम है! स्त्री की सुरक्षा उसकी इज्जत समझकर

उसके हजारो बंधनों में बंधता रहता है! जातीधर्म की संस्कारों की प्रकृतियों के कारण पुरूषोंने उसे अपनी आन, बान, और षान बना लिया है! स्त्री समंस्या समाज की वह जिवन्त समस्या है, जो परीवार,

Chronicle of Humanities and Cultural Studies
(UGC Approved Journal No. 63716)

ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

परदेश ग्राम – नगर सर्वत्र उपस्थित है! यह ऐसा ज्वलंत प्रष्न है! की जो प्रत्येक विचारषिल व्यक्ती को चिंतित करणे केलिए विवष करता है! नारी सृष्टी की सुंदरत्म वस्तू है! उसका रूप ही श्रेष्ठता को सिध्द करती है! उसका आत्मगौरव अखंड सेवा और त्याग वृत्ती और भी महिमामयी बताने है! उसकी मोहक छवि ने पुरूष वृत्ती को सदैव लुभाया है और उसकी सेवा त्याग वृत्तीने अभिभूत किया है भारतीय वाङःमय ने नारी महिमा का गान हुआ ही है भौतिकवादी सभ्यता का साहित्यकार भी उसके संग को प्रिय मानता है गेट का कथन है Socicty of Womens is Foundaction of good Manners तो लावेल की चिन्तनधारा गेटे से भी बढकर आगे चलती है! Earth`s Noblest thing is a women perfact नारी मुक्ती की भावना सार्वभौमिक ही नहीं सार्वकालिक होती है! नारी मुक्ति अब एक विष्य प्रचलित पारिभाषिक षब्द बन गया है! जिसे इंग्रजी में वुमेन लिबरेषन वीमेंस इमेंसिपेषन या वुमन मूवमेंट जैसे नामोसे पहचाना जाने लगा है नारी वाद या फेमिनिज्म भी इसके पर्याय माने जाते है नारी मुक्ति, से अभिप्राय नारी की जिवन दषाओं में उस हाद तक सुधार लाना है, जहाँ तक की किसी देष के पुरूषों की जिवन दषा में सुधार से आषय नारी की दिर्घायु, उसकी स्वास्थ रक्षा, षिक्षा, रोजगार तथा राजनैतिक अधिकारों तथा आर्थिक सुख व स्वालंबन का पुर्ण संरक्षण है जिससे उसकी अस्मिथा बन सके, पुरूष पर उसकी निर्भरता समाप्त हो और किसी भी रूप में दर्जा दोयमना रहे!

हिन्दी साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर युग में नारी जिवन की भूमिका एवं उसकी समस्यौंको लेकर हिन्दी उपन्यासकारों और कहानिकारों ने तेजी के साथ काम किया है और आज भी स्त्रीविमर्ष चला आ रहा है! वर्तमान समय में सामाजिक परीवेष में नारी की स्थिती, नारी पुरूष के पारस्पारिक समवन्व, नारी के प्रति पुरूष का संकुचित दृष्टि कोण एवम् पुरूष के साथ आधुनिक नारी की सहायता का वास्तव चित्रण इन कृतियों में झलकता है! उषाप्रियवंदा इस दौर की महिला लेखिका है जिस वक्त प्रेमचंदजी बहुत पिछे छुट गये थे, और यषपाल, जिनेंद्र तथा अज्ञेयजी का कहानी का मुहावरा भी रचना के केंद्र में नही रह गया था, जिसमें मोहन राकेष, कमलेष्वर, राजेंद्र यादव तथा नर्मल वर्मा न केवल परंपरागत कहानी के कलेवर को व्यापकता में छोडते है, अपितू समकालिन परीवेष की विद्रपता से विक्षुब्ध होकर व्यवस्था के बदलाव की जन आकांक्षायों को नई भंगिमा के साथ व्यक्त करते है! यहा मोह भंग इतना व्यापक है की संपूर्ण व्यवस्था के प्रति विद्रोह की मानसिकता दिखाई देती है! इस व्यवस्था विरोध्द का राजनैतिक पहलू सरकार और प्रषासन तंत्र जुडा है तो सामाजिक पहलू नारी मुक्ति की कथा कहता है नारी मुक्ति की आकांक्षा इस आकांक्षा हेतू उपजा संघर्ष एवं मुक्ति सार्थक तलाष कहानी साहित्य के साथ उपन्यास साहित्य में भी अभिव्यक्त हुई है उषाप्रियवंदा, मंनुभंडारी, कृष्णासोबती, मालती जोषी, राजीषेट तथा मृदृलागर्ग आदि लेखिकाएं इसी दौर की प्रतिनिधित्व करती है! तद्नंतर महिला लेख्रिकाओने औपन्यासिक कृतियों में नारी जुडे विभिन्न मुद्कों उपन्यासके कथ्य के केंद्र बिंदु के रूप में प्रकट करते हुए, नारी मुवित के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन किया है आज का स्त्रीलेखन विकसित एवं परीष्कृत होता जा रहा है! आज की स्त्री का दायरा सिमित नही विस्तृत है! वह हर क्षेत्रमें मौजुद है इसी कारण वस नये – नये विषय नये – नये वाद उनकी रचनाओं आते है, नर नारी की मानसिकता को लेकर डॉ. प्रतिभा पाठक ने लिखा है! नर और नारी की मानसिक भिन्नता का अनेंक प्रकारसे विषलेषण करने पर पता चलता है की, नारी की मानसिकता उसकी षारिरीक संरचना विषेष कारणही नर से भिन्न है सामाजिक परिवेष, पारिवारीक तथा व्यक्तिगत परिस्थितियॉं, संस्कार और मूल्य, सब मिलाकर नारी मानसिकता की निर्मिती करती है जन्मसे लेकर वारथा तक नर–नारी की मानसिकता में कोई अंतर नहीं होता है! समाज में इसी मानसिकता के परिवर्तन की प्रकिया का साहित्य पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है! साहित्य के माध्यमसे स्त्री के स्वत्व की पहचान करने का प्रयास किया! हिंदी कथा साहित्य के अंतर्गत महिला लेखिकाओं ने नारी – पुरूष सम्वन्धों के अलावा अनेक सामाजिक आर्थिक राजनीतिक, तथा विविध संदर्भो की कहानियॉं भी लिखी है! आज के कथा साहित्य में स्त्री लेखन के विविध आयाम दिखाईं देते है, आज की स्त्री परक रचनाएँ समाज की चिंता करनेवाली रचना है! आज की महिलाओं में अदम्य षक्ति, बुध्दिमता और कार्यक्षमता तथा सामर्थ्य को पनपता देख जग हैरान है! महिलाएँ अपने जीवन की अस्तित्व की लडाई केलिए एक चुनौती के रूप में उसे स्वीकार का रही है! ऐसे समय में नारियों में जो बल आ गया है! वह एक निष्ठता, धैर्य, कामना, लगन का नतीजा है! फिर भी समाज में जगह जगह उसके साथ गलत खिलवाड होता नजर आता है! ऐसे समय में आधुनिक नारी संक्रमण की स्थिति से गुजर रही है! आधुनिक नारियों में आए सुधारों को षालीनता, नैतिकता के नाम पर उसकी

आवाज दबाई जा रही है! आज की महिलायों में प्रेम व स्नेह करनेवाली महिला सबको स्वीकार्य है, लेकिन महत्वकांक्षाओं की पूर्ति की दिषा में षिखरों को छुनेवाली संघर्षरत महिला उनकी दृष्टि में हेरा है! फिर भी राष्ट्र में रहनेवाली महिलाओं की उन्नति पर ही समाज व राष्ट्र की उन्तति निर्भर होती है!

आज हर जगह पर बडे जोर – षोर से स्त्री – विमर्ष पर बातचीत हो रही है और स्त्रियों के अधिकारों को लेकर गंभीर रूप में चर्चा होती है इतनाही नही अनेक कवियों, लेखकों और समाजसुधारकोने स्त्री विमर्ष को लेकर अनेक पुस्तकों का लेखन भी किया है, जिनसे स्त्री षक्ति को बढावा तो दिया गया, साथ ही सदियों से स्त्रीयों ने सही प्रताडनाओ, तकलिकों, अन्यायों, अत्याचारों को दर्षाकर हमारे समाज की असामाजिकता, गलत परम्पराओं, रूढियों, पुरूषवादी मानसिकता का पर्दाफाष किया है! इन सारे पहलकारियोंका स्त्रीयों को लेकर जो कार्य हुआ है! वह बधाई के पात्र है लेकिन इनका कार्य आज के समयमें किस दिषा और दषा में चल रहा है? इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता!

संदर्भ ग्रंथ सुची

1) जगदीष्वर चतूर्वेदी – स्त्रीवादी साहित्य विमर्ष.
2) वर्मा – षृंखला की कडियां.
3) डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे – आधुनिक हिन्दीसाहित्य का इतिहास.
4) सामाजिक संस्था – दा. धो. काचोळे.
5) सामाजिक संस्था – दा. धो. काचोळे.
6) डॉ. प्रतिभा पाठक – समकालीन हिन्दी उपन्यासकी आधुनिकता.

❑❑❑

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

ISSN: 2348-1390

NEW MAN

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES

VOL. 4 SPECIAL ISSUE AUGUST 2017

A REFEREED AND INDEXED E JOURNAL

IMPACT FACTOR: 4.321 (IIJIF)

UGC Approved Journal No. 45886

Special Issue
On the occasion of National Seminar on
Women Safety: Challenges and Remedies
Organized by
Late Ramesh Warpudkar College, Sonpeth and
Shri Panditguru Pardikar College, Sirsala

Chief Editor
Dr Kalyan Gangarde

Prin. Dr V D Satpute

Prin. Dr. R T Bedre

Associate Editors

Dr. M G Somwanshi
Mr. P T Jondhale
Dr. S A Tengse
Dr. U Y Mane
Mr. A K Jadhav
Dr. A B Walke

NEW MAN PUBLICATION
PARBHANI (MAHARASHTRA)

VOL. 4 SPECIAL ISSUE AUGUST 2017 www.newmanpublication.com

SECTION 'C'

54 कामकाजी महिलाओं का योन-उत्पोडन / प्रा.डॉ. राम सदाशिव बडे

55. हिंदी उपन्यास में कामकाजी स्त्री की त्रासदी / डॉ. बाहेती कांचनमाला पांडुरंग

56. मीडिया, समाज और नारी छवि / प्रा.डॉ.टेंगसे दिग्विजय माणिकराव

57. महिला सुरक्षा -कानूनी एवंम सामाजिक अधिकार / प्रा.डॉ.गोपाल गांगर्डे

58. महिला हिंसा एवं कानून /प्रा. पाटील कल्याण शिवाजीराव

59. महिलाओ के प्रती घरेलू हिंसा /डॉ. छाया करकरे

60. मैत्रेयी पुष्पा कृत 'जाना तो बाहर ही है' में नारी समस्या / प्रा. डॉ. रेंविता बलभीम कावळे

61 भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिती एवं सुरक्षा /कुलकर्णी कृष्णकुमार बालासाहेब

62 वैचारिक पृष्ठभूमि और नारी / प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव

63. महिला सुरक्षा एवं कानुनी अधिकार / डॉ.संतोष बाबुराव कुन्हे

64. शंकर पुणतांबेकर के व्यंग्य में व्यक्त नारी चेतना /प्रा. मारोती भारतराव लुटे

65. महिलाओं के अधिकार और कानून / प्रा. पांटकुले हिरा तुकाराम

66. महिला विकास एवं आर्थीक अधिकारों की सुरक्षा / प्रा.डॉ.डी.बी. सोळूंके

67. तसलीमा नसरीन के साहित्य में नारी शोषण के विभिन्न रूप / प्रा. डॉ. शे. रज़िया शहेनाज़ शे. अब्दुल्ला

68. भारतीय समाज की मानसीकता और स्त्री / प्रा.डॉ.वडचकर एस.ए

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

SECTION 'D'

69. भारतीय महिलांचे मानव अधिकार व न्यायालयीनआदेशांचाअभ्यास / आकाशे एस.एम.

70. महिला सुरक्षिततेविषयी अस्तीत्वात असलेल्या कायद्याची कार्यक्षमता / प्रा. डॉ. अकोलकर आशा दगडू

71 आधुनिक काळातील महिलांची लैंगिक छेडछाड एक गंभीर समस्या / आळणे अशोक बालाजी , वलखंडे चंद्रशेखर लक्ष्मण

72 महिला विषयीचा पारंपारिक सामाजिक दृष्टीकोन / प्रा. डॉ. शशिकांत मुकुंदराव आलटे

73 भारतीय महिला सुरक्षा विषयक कायदे / प्रा.डॉ.आंधळे बी.व्हि.

74 नोकरी व व्यवसायाच्या ठिकाणी महिलांवरील लैंगिक अत्याचार : विशाखा दिशानिर्देश आणि २०१३ चा कायदा डॉ.अनुराधा हाणमंतराव पाटील, प्रा.डॉ.उल्का देशमुख

75 कौटुंबिक हिंसाचार कायदा :- २००५ / प्रा. औचित्ये बेंजामिन चार्ल्स

76 स्त्रीभ्रूणहत्या: कारणे आणि उपाय / डॉ. अमोल काळे , प्रा. जाधव ए. के.

77 कौटुंबिक हिंसाचाराचे प्रकार / प्रा. बळीराम पवार

78 कामाच्या ठिकाणी महिलांचा लैंगिक छळ (प्रतिबंध,मनाई,निवारण) कायदा २०१३ / डॉ.बने रेखा रामनाथ

79. महिलांवर होणाऱ्या हिंसेचा समाजशास्त्रीय अभ्यास / डॉ.सुनंदा भद्रशेट

80. महाराष्ट्रातील महिला सक्षमीकरण: जाणीव व जागृती / प्रा.डॉ.डी.के.खोकले, प्रा.डॉ.सुधाकर भालेराव

81 भारतीय महिला सुरक्षाची आव्हाने / डॉ.भांगे चंद्रकांत बन्सीधर

82. भारतातील भाडोत्री किंवा सरोगसी माता / डॉ. रामचंद्र मुंजाजी भिसे,

83. गृहविज्ञान विषयाची व्याप्ती आणि सुवर्णसंधी / प्रा.सौ.बोरीवाले एम.पी.

84. कामाच्या ठिकाणी महिलांचे लैंगिक शोषण २०१३ चा कायदा व सद्य स्थिती / प्रा.चाटसे अशोक जयाजी

85 उच्च शिक्षणामध्ये महिलांच्या समस्या - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन / प्रा.डॉ.चव्हाण एस.जी.

86. कौटुंबिक हिंसाचार : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास / प्रा. चव्हाण रामराव धेनू

68.
भारतीय समाज की मानसीकता और स्त्री

प्रा.डॉ.वडचकर एस.ए
दुरभाषा - ०८९८३८४८७८८
के. रमेश वरपुडकर महा. सोनपेठ. जि.परभणी

मानवी जीवन यापन करने की पध्दती उसकी मानसीकता पर निर्भर करती है और यह मानसिकता उसकी परंपरागत रही है | मानव हजारों सालोंसे जिस मानसिकता का गुलाम है उसमें सबसे केंद्र में पुरूष प्रधान संस्कृती रही है| जिसमें स्त्री को दुय्यम स्थान मिला है | स्त्री में अनेक वर्षो की परंपरा मानकर गुलामी को स्वीकार करलिया है| हम भारतीय परंपराओं और सभ्यता को विश्व में श्रेष्ठतम मानते है, किंतू यह भी सत्य है कि हमारे भारतीयों में भी कई बार स्त्री को केवल भोग की वस्तू ही माना गया है| भक्तिकालीन संतो ने स्त्री के कामिनी रूप से दुर रहने की सलाह इसीलीए दी है| आज परिस्थीतीयाँ बदल गयी है. स्त्री आज पूरूष के कंधे से कंधा लगाकर काम कर रही है. इतनाही नही स्त्री ने आज कुछ क्षेत्रों में पुरूषों को पिछे छोड दिया है | जो काम पुरूषों का माना जाता था उसमें भी स्त्रीयोंने अपना कब्जा जमा लिया है| राजनीती. सामाजिक. वैज्ञानिक. तकनिकी. शिक्षा. सुरक्षा. खेल-कुद आदि के साथ जीवन के जटील कामों में भी स्त्री ने अपने आप को सौंप दिया है | आज हम देखते है हिंदुस्तान में मोटार, कार ड्रायव्हींग विमानिक, किसान.खेत. खलिहान पर कब्जा तो कर लिया है| साथ ही साथ कई स्त्रियाँ ऐसी भी है जो बिना पुरूष के अपने परिवार की देखभाल अच्छी तरह से कर रही है| पुरूष प्रधान संस्कृती में पुरूषी मानसिकता को बदलना कोई आसान काम नही है| इस विषय पर डॉ. रणसुभेंजीका मतंव्य है प्रश्न केवल स्त्री की मानसिकता को बदलने का नही, पुरूष की मानसिकता में भी मुलभूत परिवर्तन की जरूरत है| क्योंकी हजारों वर्षोसे उसे यह चेताया गया है की, स्त्री या तो श्रध्दा की अधिकारणी है (माँ या बहन नारी तुम केवल श्रध्दा है) अथवा भोग की पत्नी या वैश्या |आधुनिक समय में स्त्रीयाँ अपने कर्तव्य तथा सक्षमता का परिचय दुनिया भर में देने लगी है. तो दुसरी ओर एक वर्ग आज भी स्त्री को केवल भोग की वस्तु. मनोरंजन का साधन और मानव जाती की उत्पादन करने वाली मशीन के रूप में ही स्विकार करने की मानसिकता का गुलाम है|

स्त्री की सुरक्षा उसकी इज्जत को अपनी इज्जत मानकर समाज ने हजारों बंधनो में बांधा है| जाती धर्म और संस्कारों के नामपर समाज ने कुप्रवृत्तीयों के कारण आन.बान और कहीं-कही पर शान तक बनाया है| घर में लडका - लडकी में अंतर किया जाता है| लडकी घर से बाहर निकलती तो उसके वापिस लौटने की फिक्र माँ बाप करते है. किंतू लडके की नही ! जितने भी हो सके पुरूषों ने बंधन स्त्रीयों पर लादे है इन सभी बंधनो को बोझ ढोते हुए भी स्त्री ने अपने कर्तव्य का पालन करके बेटी, बहन. बहु.माँ जैसे रिश्तों को निभाते हुए अपने कर्तव्य का पालन कर जोहर और हुनर दिखा रही है| हिंदुस्तान में स्त्री उध्दार को लेकर संतो के साथ-साथ राजाराम मोहनराय, बालगंगाधर तिलक. सर सय्यद अहमद खाँ. भीमराव अंबेडकर. छत्रपती शाहुजी महाराज, ज्योतिबा फुले, मोहनदास करमचंद गांधी, कांशीराम या महिलाओं में रजिया सुलतान, लक्ष्मीबाई, चाँदबीबी, सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई, जोनत महल आदि ने विधायक और रचनात्मक कार्य किया है| कालांतर में भारतीय समाज सुधारकोंने उन्नसवीं शती के उत्तरार्ध में स्त्री को लेकर चिंतन. मनन का प्रारंभ किया है| विश्वभर में महिला-दिन, मानवाधिकार, स्त्री समानता, स्त्री - हक्क, स्त्री सुरक्षा को लेकर गंभिरता से विचार किया जाने लगा है|

हिन्दी साहित्य में संतो के प्रयासों के बाद आधुनिक काल के कवियों में मैथलीशरण गुप्त. निराला.प्रसाद. सुमित्रानंदन पंत. फणीश्वरनाथरेणूजी आदि साहित्यकारोंने स्त्री सबलीकरण को लेकर अपनी कलम चलाई है. मैथलीशरणजीने तो रामकथा का नये सिरे से रचने का प्रयास किया है| पुरूषोत्तम राम के जगह लक्ष्मण और पत्नी उर्मिला को नायिका की हक्कदार बनाकर कैकयी को भी क्षमा का पात्र बनाया है | मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री विषय और वेदना को केंद्र लोक चरित्रों के माध्यम से स्त्री जीवन के सामाजिक बिंबो को उभारा है | मैत्रेयी पुष्पा के विषय अन्य लेखकों की अपेक्षा अलग है| विषय अत्यत मार्मिक एवं संवेदनापुर्ण है| उनमें स्त्री की अस्मिता, आकांक्षा है. पुरूष की मानसिकता को बदलना है जो तसलिमा नसरीन, प्रभा खेतान. चित्रा मुदगल आदि लेखिकाओं में रहा है| सिधी-सी बात है. समाज से भिडने के लिए और

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

समाज के दबाव को झेलने के लिए शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक मजबूती चाहिए उसके सामाजिकस्थिति के पास तिनों प्रकार की मजबूती थी! यहां जबहम महिलाओं के सशक्तीकरण को लेकर विचार करते है, तब सबसे पहले सवाल उठता है कौन नही जानता कि संपत्ती में बंटवारे को लेकर समाज कितना पुरूषवादी है| बेटीयो को हिस्सा देने के मामले कानूनी कार्यवाहीयों के जरिए खुद को फायदे में रखने की खातीर कितने वकीलों -जजो को मुनाफा देते है! इसके अलावा भी पुरूषों के विचार और साहित्य की दुनिया पर नजर डाले तो शायद ही कोई हो जो न मानता हो की महिलाओं को सशक्तीकरण की जरूरत है| जो स्त्री लेखन करता नही वह भी, सामाजिक भी कहते है कि समाज में औरतों की हालत पतली है|

आज कल तो पुरूषों द्वारा कहानी - कविता के जरिए स्त्रियों की दयनीयता को महसूसने की होड लग गयी है ऐसे में जरूरी है की इनसे कह दे की जरा आत्मावलोकन करे। जो कविताएँ स्त्री और स्त्री चरित्रों का आह्वान करती है| माँ, नानी, दादी, बेटी, बहू, बहन के रूप में समझाती है किंतू इन्सान के रूप में नहीं| जो खानदान में तयशुदा रोल में ढल गयी और भुल गयी की वे अपने आपमें एक इन्सान भी है| जिसके होने से परिवार की कई जिंदगीयां तो संवर गई मगर खुद उसका वजुद मिट गया | पुरूष लेखकोंने अनुभव के स्तर पर स्त्रीमन में प्रवेश कर वहाँ से खुद औरत बनकर दुनिया को देखा है एक और तरिका है स्त्री केंद्रित कलम का जो महिलाओं को बराबरी, इंन्साफ और हक हासिल करने के लिए लडता है| यहाँ आह्वाहन के साथ-साथ धिक्कार भी करता है, जो औरत के संकोच, बुजदिली, धर्मभीरूता संस्कारी और सुशील बनाव को छोड आगज्वाला बनने की चेतावनी देता है|

यहाँ हमदर्दो-भरे लेखन विश्लेषन में इमानदारी की बेहद कमी है| जिनपर पुरूष-समाज की मौन स्वीकृती जारी है जो महिला सबलीकरण में सबसे बडी बाधा है| स्त्री मुक्ती के नारे लगानेवालों ने पिता - भाई के रूप में क्या आपने अपनी बहन या बेटी को परिवार की जायदाद में हिस्सा दिया ? अगर पिता - भाई के रूप में पुरूष इमानदार और न्यायप्रिय नहीं है तो उनहीं बेटीयाँ-बहनें अबलाएँ ही बनीं रहेंगी| पती - ससुराल और समाज में हैसियत-हिन बनने की प्रक्रिया मायके से ही शुरू होती है जब लगता है

१) विवेकशिल होने के लिए शिक्षा नही मिलती |

२) आत्मविश्वासी होने के लिए आजादी नहीं मिलती|

३) आत्मनिर्भर होने के लिए परिवार- पिता की जायदाद में हक बराबर हिस्सा नहीं मिलता|

उपरोक्त तीनों प्रकार के धन से मायके में ही मिलने चाहिए | अगर स्त्री इसमें कमी है तो क्या ससुराल ही नही पूरे समाज के सामने भी सम्मान की जिंदगी नही जी सकती और नही उसे आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता पर कितने भी भाषण देने से कुछ भला नही हो सकता| स्त्री जीवन की चिन्ताएँ सामाजिक, आर्थिक, कानूनी और पितृ सत्तात्मक व्यवस्था के मुद्दो के रूप में विश्लेषित हुई है! यह सच ही है महिला लेखन में लगातार कुछ नया और उद्वेलित करता हुआ सच सामने आने लगा है| सबसे बडी चिंता यही है की सम्पूर्ण सामाजिक और पारिवारीक ढाँचे में स्त्री को जगह तलाश करना एक साजिश यह हुई है कि स्त्री के मन को उसकी देह से अलग कर दिया है! उसकी आत्मा को मारकर, सोच की शक्ती को कुचलकर केवल देह को ही केन्द्र में रखा गया है| स्त्री शोषण का मुख्य आधार शारीरीक दृष्टी से ही अधिक है| हां मध्य वर्ग में स्त्री शिक्षा की वजह से लडकियों की शिक्षा आगे बढी है| सरकारी निर्तीयों की वजह से लडकियों की शिक्षा आगे बडी है किंतू मर्द की जहाँ अपनी ताकत- हैसियत की स्तर पर भागीदारी की बात आती है, वहाँ स्त्री सारासार मुर्जरिम की भुमिका में है| तब वह दहेज या अन्य सामाजिक कुरीतियों की आड में छिपकर मिमियाता है! तब पलायनवादी तर्क सामने आता है| कि बेटी-बहन को तो ससुराल से भी मिलता है! यह तर्क देते वक्त पुरूष यह नही सोचता की वह खुद अपने खुन, अपनी औलाद को नहीं दे रहे तो वो पराए लोग जो दहेज के बदले ले गये वे अपनी जमीन जायदाद स्त्री के नाम लिखवाएंगे ? हे पुरूषो जिस दिन बेटी के पास पलटकर वापस आने का संबल अपना घर होगा, जिस दिन डोली अर्थी से वह मुक्त होगी, जिस दिन धार्मिक, कर्मकांण्ड, बाह्यडम्बर आदि से मुक्त हो संबल जायेगी उसी दिन बहुए-पत्नीयाँ आत्मसम्मानी, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर जरूर होगी|

स्त्री-विषयक चर्चित मुद्दों में एक और समस्या स्त्री के मन को कचोटती रहती है और वह है स्त्री देह की मानसिक जकडन से मुक्त करवाकर स्वांतः सुखाय भोग का मामला| स्त्रीयां खामखाह अपने शरीर के प्रती अत्याधिक सतर्क होकर गुलामी में जकडी हुई है कैसे वह शुचितावादी धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं को ढोकर जीवन सुख से खुद को वंचित कर रही है कैसे वह समाज निर्मित भुमिकाओं में फंसकर रह गई है और एक स्वच्छंद स्त्री होने के सुख से वंचित है|

Lale Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

स्त्री सबलीकरण मे पुरूष वर्ग किसी तरह भी घाटे में नही है! परिवार की संपत्तीपर, सारे अधिकारों पर और सत्ता पर एकछत्र राजा बन बैठा है। उसकी सत्तापर कहींसे आंच नही आ रही है| वह कमजोर, अधिकारहीन, विवेकहीन, आत्मविश्वासहीन, संपत्तीहीन महिलाओं से घिरा हुआ है| समाज में न्यायप्रिय, आधुनिक प्रगतीशील, स्त्रीवादी दिखने के लिए वह सभी पाश्चात्य सिध्दांतोंवादों को अपनी वाणी में आत्मसातकर समय-सम्मत बात करता है| स्त्री और समुदाय की दासता के कितने रूप समाज में बिखरे पडे है| उनपर भी ध्यान देने की जरूरत है| हम जब भी अपनी सुप्त चेतना को झकझोरते है तो यह सत्य सामने आता है कि स्त्रीयों से सम्बन्धित कई धार्मिक और सामाजिक विषय से है जिन्हे हम प्रथा कह कर महत्व ही नहीं देते। धर्म के नामपर सदियों से चलता आ रहा व्रत, अनुष्ठान, पुजापाठ के कर्म विधानों से स्त्रियाँ वैसे ही जकडी हुई है फिर अब उनके व्यस्त कार्यक्रमों में सिरीयल भी आ जुडे है| अब उन्हे दुनिया देखने की फुर्सत ही कहाँ है? गहने, कपडे, सौंदर्य प्रसाधनों से दबी ढंकी इन स्त्रियों को अपने मुख्य समस्या का बोध ही नही है| एक विचित्र किन्तु सामाजिक अनिवार्यता है कि नैतिकता से जितनी टकराहट स्त्री की होती है, जितने प्रश्न उससे पूछे जाते है उससे आधे से भी कम पुरूषों से नहीं पुछे जाते है। मिडीया और बाजार ने स्त्री की स्थापित छवि के अनेक प्रतिमानों को खण्डित किया है | इसके लिए कौन जिम्मेदार है| यह एक अलग बहस का मुद्दा है| फिलहाल इतना जरूर कहना चाहूंगा कि अपने स्वतंत्र लेखों और वक्तव्यों में साहित्यकारानों जो प्रखरता और स्त्री जीवन के जरूरी सवालों के प्रति संलग्नता व्यक्त की है, वह कहानियों में और समाज में व्यक्त होना शेष है|

□□□

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 I Issue 11 I Feb 2018

समकालीन हिंदी पद्य साहित्य विवेचन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक

डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

2017 - 2018

समकालीन हिन्दी कविता

डॉ. वडचकर. एस. ए.

246-251

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 246-251
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

समकालीन हिन्दी कविता

डॉ. वडचकर. एस. ए.

हिन्दी की आधुनिक कविता नई कविता के पश्चात समकालीन कविता की ओर मुडती नजर आती है। यह हिन्दी कविता का एक नवीनतम आयाम है, जो अद्यतन जारी है । नई कविता के बाद भी काव्य क्षेत्र में नई समस्याएँ विद्यमान है। इसमें संम्भावनाएँ और समस्याएँ दोनों एक दुसरे पर हावी होने की चेष्टा करती है। समकालीन कविता एक वैचारिक क्रांतिका दर्शन है, जो भारतीय समाज में व्याप्त सभी प्रकार के अन्धविश्वासों, मान्यताओं, परम्परांओ व रिती–रिवाजों का पोषण करनेवाले धर्म ग्रंथो का केवल विश्लेषण ही नही बल्की भारतीय समाज में व्याप्त सभी प्रकार की असमानताओं का दर्शन हैं। समकालीन कविता अपने समय की पहचान है। यह कविता अपने समय के अन्त विरोधों की कविता है। इसमें आज के संघर्ष करते आदमी की सच्ची तस्वीर है। समकालीन कविता जो है उसका प्रसारण है। जिसे पढ़कर वर्तमान काल का बोध होता है! उसमे जीते, संघर्ष करते, लड़ते, तड़पते, गरजते, ठोकर खाकर सोचते वास्तविक आदमी की पहचान है।

समकालीन कविता में कवि अज्ञेय जी की कविता साँप के प्रति यह व्यंग्यात्मक भावसे मानवीय प्रवृत्तीवर रोशनी डालती है। आज महानगरों का वातावरण दिन–ब–दिन दुषित बनता जा रहा नजर आने लगा है। बढ़ती आबादी, बेरोजगारी गरीबी में सामान्य जनता पीसने लगी है। न रहने के लिए मकान है, न फुटपाथपर जगह, न

डॉ. वडचकर. एस. ए. : कै. रमेश वरपूडकर महाविद्यालय, सोनपेठ

शुध्द हवा है, न पानी उत्पन्न कम और खर्चा ज्यादा है। जैसे तैसे गुजारनेवाला समाज बुराई से अनैतिकता से प्राप्त पैसों की तरफ बढ़ने लगा है। साँप को संबोधित करते हुए कवि महानगरिय व्यवस्था से कवि पूछता है–

late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

साँप,
तुम सभ्यतो हुए नहीं
नगर में बसना भी
तुम्हे नहीं आया! – अज्ञेय

इस कविता में कवि अज्ञेयजी शहरी आदमी की आदत बडप्पन जताने के लिए अपना सामर्थ्य प्रस्थापित करने के लिए दुसरे आदमी मी जान ले लेता है। स्वार्थी आदमी के व्यवहार को बताने की कोशिश की है।

कवि ओमप्रकाश वाल्मिकि की मश्रेष्ठफनामक कविता यथार्थ के गहरे भावबोध के साथ सामाजिक शोषण के आक्रोश जनित गम्भीर अभिव्यक्ती का लेखा जोखा है। यह कविता सामाजिक शोषण के विविध आयामों से टकराती है। मनुवादी व्यवस्था के सामने खुलकर प्रश्न उपस्थित करती है। जिस मनुवादी व्यवस्था ने मनुष्य को मनुष्य का हक नही दिया था। मनुवादी व्यवस्था ने कर्म को श्रेष्ठ न मानकर वर्ण को श्रेष्ठ मानकर मनुष्य को जानवर से भी बढ़कर जुल्म ढाले है। उस वर्णवादी व्यवस्था के खिलाफ जंग लडाने के लिए पूरी ताकद के साथ हमे खड़ा करती है।

एक रोज मैने भी
जुटायी हिम्मत
और पूछलिया उससे
वही सवाल
देखा उसने मेरी ओर
बोला,

मै जन्मा हूँ ब्रम्हा के मुख से – ओकप्रकाश इसलिए श्रेष्ठ हूँ – ओमप्रकाश वाल्मीकि ने युगों, युगों से प्रताड़ित शोषित, वंचित मानव को चेतना का हथियार बनाया है। वर्ण व्यवस्था और जातिवाद से उपजे अवसाद ने कविता में सामाजिक विद्रोह का रूप धारण कर लिया है। ईश्वर धर्म सभ्यता, संस्कृती विषयक पूर्ण

विश्वास, निष्ठा तथा आस्था को कवि बुरी तरह से कुचलता है। उसे ईश्वर धर्म के नामपर चलाए जा रहे पाखण्डो से नफरत है।

स्वीकार्य नहीं मुझे
जाना / मृत्यु के बाद
तुम्हारे स्वर्ग में वहाँ भी तुम,
पहचानोगें मुझे
मेरी जाति से ही । ओमप्रकाश वाल्मीकि

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth. Dist. Parbhani

यहाँ समाज में जुल्म है, पीडित है पूँजी का नग्र नृशंस नत्य है, शोषण है! आज हमारी व्यवस्था, प्रजातांत्रिक व्यवस्था भ्रष्टाचार के आकंठ में डूबी है। ऊपर के लोग सबकुछ हड़पले रहे है। पर वे नीचे वालों की नजरों से बच नहीं पाते । मजदूर सचेत लोगों को सब कुछ मालूम है। वे सभी जानते है कि उनके शोषण का दुसरा तरीका आजमाया जाने लगा है। अब वे सचेत हो गए है – तब उन्हे लगता है, यहाँ तो सच बोलना गलत है। आज सत्य बोलना काई मायने नही रखता सर्वत्र असत्य का बोल बाला है। यहाँ राजनीतिज्ञ के असली चेहरों को पहचानकर उनकी कारगुजारियों को बेनकाबकर पूँजिवादी व्यवस्था की पोल खोलकर आदमखोर, पूँजीवादी व्यवस्था, गुण्डों, हत्यारों एवं असामाजिक तत्वों को पनाह देकर देश में अशांति फैलाकर स्वार्थ साधनेवालोंकों वक्रता से देखा है। कवि नागार्जून की कविता महजार हजार बाहोंवालीफकाव्यसंग्रह से मसच ना बोलनाफकविता सच्चाई की नंगी तस्वीर है। सत्य बोलना पाप पुण्य है, और झुठ बोलना पाप है ऐसा कहा जाता था किंतु आज सत्य बोलना पाप है और –ुठ बोलना पुण्य है ऐसा कहना उचित होगा। यहाँ प्रजा विचित्र है मलबारों में रहनेवालों के पास अन्न बहुत है, उन्हे हजम होता नहीं है, किंतु खेतिहार के पास वक्त की पेट की आग बुझाने के लिए अन्न नहीं है। समाज में अनाचारी वृत्ती फैली है डाकू गुण्डे खुले आम हत्यार ले कर फिरते है, उनके खिलाफ बोलने की किसी में हिम्मत नहीं है, जो हिम्मत करेगा उसकी जेल पक्की हो जाती है। नागार्जुन की कविता में हमे देखने मिलता है।

सपने में भी सच न बोलना वर्ना पकडे जाओगे,
भैय्या, लखनऊ–दिल्ली पहुँचो, मेवा–मिसरी पाओगे।
माल मिलेगा, रेत सको यदि गला, मजूर–किसान का

हम मर–भुक्खों से क्या होगा, चरण नागार्जुन गहो श्रीमानों का।

कवि सजग नागरिक की तरह अपने देश काल की स्थितियों के प्रति संवेदनशील होता है। वह आवश्यकतानुसार उनस्थितियों का विवेचन, विश्लेषण और मुल्यांकन करता है। मुल्यांकन की प्रक्रिया में उसकी समाज संवेदना, संवेदनात्मक –ान में परिणत होकर सर्जनात्मक – कल्पना के स्वरूप प्रदान करती है। यह वैयक्तिकता से अधिक सामाजिक एवं सामुहिक चेतना निराशा, अवसाद, क्रुरता, हिंसा आदि से गहरा सरोकार रखती है। कवि अरूण कमलने मअपनी केवलधारफ सबूत और मनये इलाकेफमे एन्द्रिक चाक्षूष कुछ यों बयान किया है।

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे बसंत का गया पत–इ को लौटा हूँ
जैसे वैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth. Dist. Parbhani

एक ही कविता में षड्ऋतु और अनेक महीनों को याद किया है, यहाँ स्मृति का भरोसा नही प्राकृतिक परिवर्तन है या वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति की माँग है इसे क्या माने। आधुनिकता ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि हमारे पास इतना भी समय नहीं है कि हम प्रकृति को निहार सके और उसके अनावृत सौंदर्य को अपने भीतर उतार सके। आज उत्तर आधुनिकता, वैश्विकरण, निजीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण ने बहूत कुछ बदल चुका है। इसलिए लोंग दिखावे एवं नखरे करने लगते है। पर्वत के समान महँगाई के कारण सामान्य जीवन अस्त व्यस्त हुआ है। रहजनी, लुटपाट, हत्या धोखाधड़ी एवं चारसौ बीसी बढ़ने लगी है! पारिवारीक सामाजिक राजनैतिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर भी फरेब बढ़ा है । धीरे–धीरे लोग संवेदना शुन्य हो रहे है। नैतिक मुल्यों का ऱ्हास होने लगा है, लोग एक दुसरे की अर्थी उठाने में भी डरते है। जनसंख्या वृध्दि तो हुई परंन्तु जिस तरह से औद्योगिक एवं तकनीकी विकास होना चाहिए था, नही हुआ लोग एक दुसरे के खुन के प्यासे बनते नजर आ रहे है। मुक्तीबोध, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय एवं धुमिल आदि ने इस प्रवृत्तीका खुलकर विरोध किया है। सामाजिक एवं राजनैतिक कु

चक्र से लड़ता आम आदमी । विषमता और कुचक्रों की दीवारों पर चोट करने के साथ–साथ आडे आई दीवार को तोडने के लिए भी जनता तैयार है।

देश तो कर्ज में डूब ही गया है
बन्धक पूरी परजा को रख हीं तो गया है।
कर्जल्यों सूदभरों, महाजन वफादर है,
जब मांगों उधार है सुक्ष्म है वो पाएगा
बाकी भूखों मर जायेगा

– भीड सतह में चलनेलगी – रमणिका गुप्ता महँगाई के साथ ही बेकारी बढ़ गई है। उसका चित्रण भी यहाँ हुआ है। मजदुरों की रोटी, कपडा, आवास की समस्या अधिकाधिक तीव्र हो गई और वेतन कुछ भी नहीं । मजदुर किसान या तो कर्ज में डूबकर मर जाता है या उसके श्रम की किमत केवल भूख ही नहीं याच नाही नही, एक भागीदारी भी है यही उसका अधिकार भी है। आम आदमी की व्यथा विवशता और घुटन भरी जिन्दगी के अंधेरे में कवयित्री रमणिका गुप्ता चेतावनी देती है।

महंगाई के घोडे पर चढके, दाम हवा से बातें करतें
वेतन के गदहे पे चढ़के, पकड नहीं हम उनको सकते
बाँध के काछा बढ़के आगे, चल रास था मले,
चल हाथ टानले, चल हला बोले, चल हमला बोल।

रमणिका गुप्ताने आम आदमी की पीड़ा का चित्रण बड़ी सशक्तता के साथ किया है। शोषण करनेवालों के प्रति घृणा प्रदर्शीत कर, मार्क्सवादी ढंग की क्रांतिद्वारा शोषण रहित साम्यवादी समाज की रचना का संकल्प करती है! समकालीन कविता का परिदृश्य बहुत ही व्यापक है। हालाँकि समकालिनता अपने आप में संशिलष्ट है। यह कविता वस्तु जगत में कई दृष्टियों से भिन्न है। समाज की हर एक गतिविधि के प्रति पूरी सचेत है। यह कविता केवल स्थायी भावों को रसात्मक रूप में व्यक्त नहीं करती बल्कि मनुष्य के जागतिक व्यवहार एवं युग की समग्र चेतना को व्यक्त करती है। यह कविता मानसिक उध्देल, नया यथार्थ की सहज प्रस्तुति तक भी सीमित नहीं है। वह उन शक्तीयों के विरूध्द जु–ारू भूमिका का निर्वाह करती है, जो

मनुष्यता के लिए संकट समान है। यह कविता आम आदमी के लिए वरदान है, उसकी मुसीबत के विरूध्द एक हथियार है। वह अपने सरोकरों और काव्य भाषा को बनाये रखने का नाम है। इसमें आम आदमी की संवेदना की अभिव्यक्ती है। समकालिन कविता अपने समय की पहचान है। यह अपने समय के अन्तविरोधों की कविता है। सारत: – समकालीन कविता आम आदमी के जीवन के संघर्षो, विसंगतियों, विषमताओं एवं विद्रुपताओं की खुली पहचान है। अंधेरे में दाम न थामनेवालों सामाजिक परिस्थितियों की कुरूपताओं और अन्तविरोधों के बीच छटपटाते आदमी की मानवीय धरातल पर रोशनी की तलाश है। अर्थात आम आदमी का संसार है। जब तक कोई व्यापक परिवर्तन समाज में नहीं होता तब तक समकालीन कविता का युग ही माना जायेगा।

संदर्भ ग्रंथ

१) साहित्य भारती – संकलन
२) समृध्द काव्य – संकलन
३) संचारिका मासिक पत्रिका
४) साहित्य अमृत मासिक पत्रिका
५) आलोचना त्रैमासिक
६) डॉ. रश्मि चतुर्वेदी – हिन्दी दलित साहित्य की विविध विधाएँ
७) डॉ. बिमलेश – हिन्दी साहित्य के विविध आयाम
८) डॉ. सरोज पगारे – हिन्दी दलित साहित्य आन्दोलन

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani
PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

हिन्दी काव्य और वर्षा

डॉ. शिवाजी आप्पाराव वडचकर

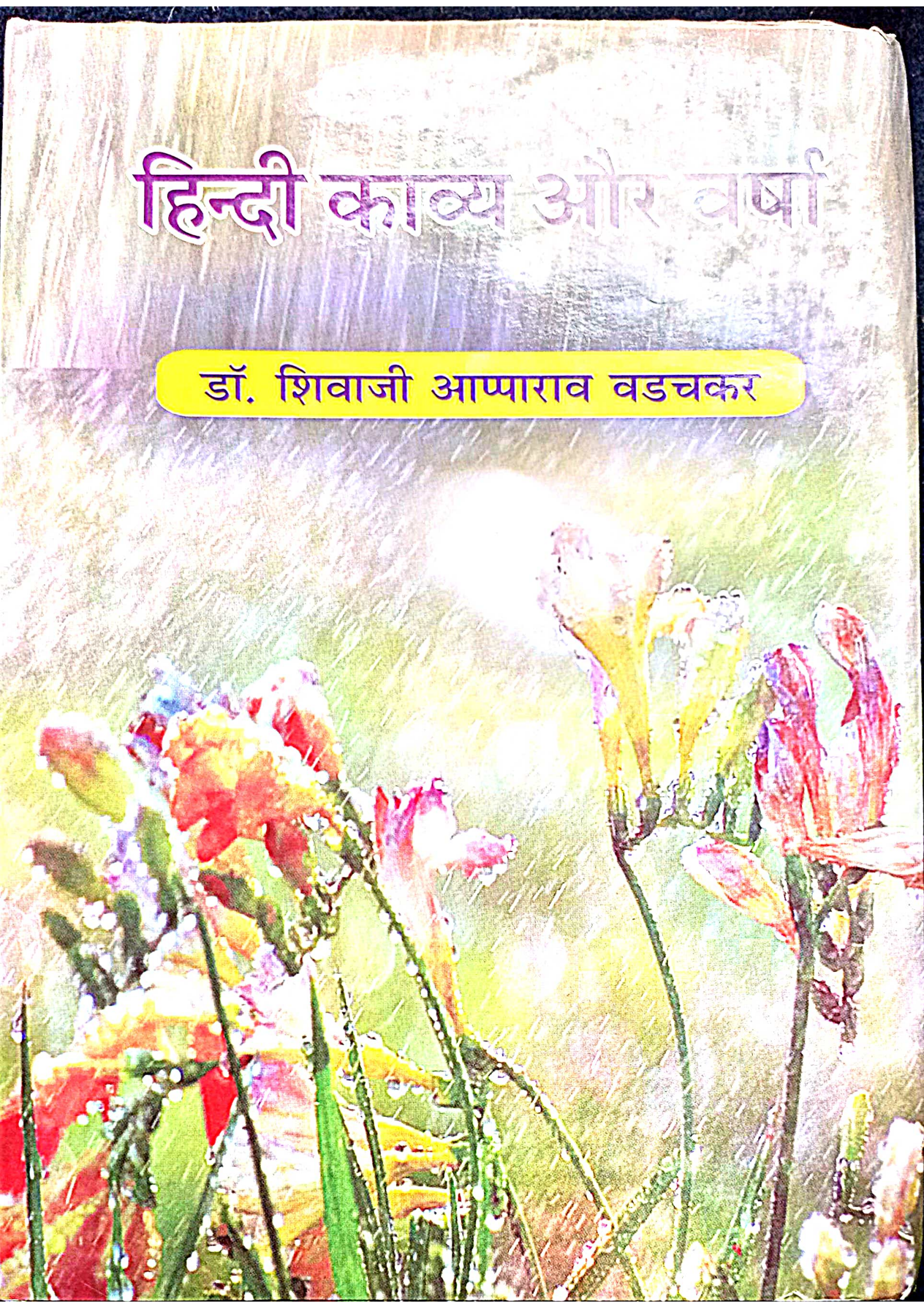

पुस्तक : हिन्दी काव्य और वर्षा
लेखक : डॉ. शिवाजी आप्पाराव वडचकर
प्रकाशक : साहित्यायन
प्रकाशक एवं वितरक
124/152-सी-ब्लाक गोविन्द नगर, कानपुर-208006
मो.: 09452530021
E-mail : sahityayan @rediffmail.com
ISBN : 978-93-85012-03-7
संस्करण : प्रथम 2017
मूल्य : 600/-
शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स
मुद्रक : ज्ञानोदय प्रिन्टर्स

समर्पण

''जिनसे प्रेम, वात्सल्य, प्रोत्साहन
पा सका ऐसे मेरे
आ. पूज्य पिताजी-माताजी
भाई
तथा मेरे गुरु बाबूजी
के चरणों में सादर समर्पित है!''

-डॉ. शिवाजी आप्पाराव वडचकर

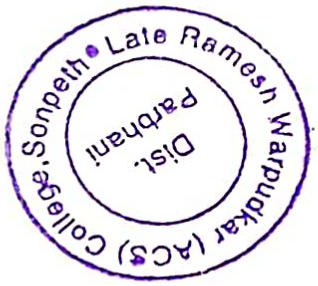

परिशिष्ट

1. तुलसीदास -श्रीरामचरित मानस-गीताप्रेस गोरखपुर
2. डॉ. बदरीनाथ कपूर - लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी कोश
3. मराठी विश्वकोश
4. डॉ. मंजुला जैन : पंत एवं निराला के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन-चिन्तन प्रकाशन
5. कबीरदास ग्रंथावली- अग्रवाल प्रेस हाथरस
6. डॉ. देशराज सिंह भाटी-भारतीय पाश्चात्य काव्यशास्त्र -अशोक प्रकाशन दिल्ली
7. गणपति चंद्र गुप्त - हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
8. डॉ. विश्वनाथ उपाध्याय- आधुनिक हिन्दी कविता
9. उमेश शास्त्री -हिन्दी के प्रतिनिधि कवि- देवनागर प्रकाशन
10. कृष्ण शंकर पाण्डेय-सर्वेश्वर, मुक्तिबोध और अज्ञेय
11. डॉ. अंजली कुंभारे- डॉ. प्रभाकर माचवे रचना संसार
12. डॉ. रामदरश मिश्रा आज का हिन्दी साहित्य संवेदना और दृष्टि
13. बच्चन सिंह-हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास-राधाकृष्ण
14. संजय कुमार -अज्ञेय प्रकृति काव्य-वाणी प्रकाशन
15. नामवर सिंह -छायावाद - राजकमल प्रकाशन
16. किरण कुमारी गुप्ता -हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण
17. कृष्ण शंकर - आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - हिन्दी साहित्य कुटीर-बनारस
19. डॉ. शिव कुमार शर्मा - हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ

❊❊❊

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani